

५३ नवमः

अगस्तदावयीया गहिऊसनावन युगमामिया ॥ कर ॥ ३९ ॥ १ नागछेगभवमाला ॥
 तानमूलमा ० ॥ कियूनयसथनी नविजकनापिशदमालिगनहमगभंगना ॥ कर ॥ द्वादिकैधठिनस
 दुषितसुनाहिर अन्नरुहाय कीउक्तियागी गदितासात्रपाणिजीयसुगममिरत्रुषिनेपवनप्रनिगव
 कु श्रुतेनुंकावघभिगकुलिठाशगरुवनाखडपायपीयूषी ॥ कर ॥ बटसफवकुंठमगिनतिश्रुत
 न्यसेरावेमहासुखलीना ॥ कर ॥ ४० ॥ ॐ ॥ १ नागविहास तानमा ० ॥ धनधनधूधनधान
 धानधन २ धनयश्चक्रिठिन २ मर्द २ वज्रधृंकसमय २ कन्दूरयागस विनवल २ कुरकुरवज्र
 धर्मसमय २ लीलालानिककर्णवन २ कुरुनिकदुलिदहधन २ सुसमाकनष्टगकमल

७७

सुखदुःख

ननरवजसूर्यप्रह्लादगमाश्च दृढमयसमनसदागुमहाश्च कल्पकलुकमालधननगना
धकवनवजसिनश्च माध्वनिस्त्वनगावपनमाश्च साध्वतसहजमहावधनश्च गहि
जिनजिक्समयश्च कायनिर्वधनश्च वक्रधनश्च कृष्णकृष्णपद्मावकसुगताश्च मधवेमधि
नघनवमोक्तश्च कृष्णकृष्णआदिमूलनवनश्च यमामिसूनगवजधन॥ ३१ ॥ ॐ ॥
१नागवधुमिनि॥ गानशूनमाथ॥ हाठारनलक्रियानिनसम्बन्धनयिकवातिनरुसाश्च
जियनायनमणिपामधनश्च मकुठकभादिगवनाश्च ॥ ३२ ॥ ननमान्वसिवनदेयाश्च
सहजसुदनीभारकालाश्च रुमविनाजिनवजवानाहिश्च रुदामहियायिनसानाश्च

विहाय न वर हरु मय न कश्चन रुनयिगाभाना शगगलनिववा निववधिन जादा शभर
मलुल रुवनीना शतिय धनूषदा गच्छादिगनासम्भन पयिसुयिषु नरुवगा ना शरुम
विनाहिन वज्र वावाही २ उक्त विनूद रवीश्रुम्भाना शगवसि लीना वज्र जायि यावल २
सतगुत्रुवन लश्रुना २ श्यमया आनन्द रुलिगन मलुल सव वज्र वावाही ॥ ० ॥
॥ ३२ ॥ ॐ ॥ नागभाद्र गीवि ॥ गालजति ॥ वकि वकि मादिन दाहिनि वलुनी २
ॐ श्य कानश्रु माघ सिद्धि वान सैराव २ जेयाह नूव वज्र कवान २ खमरु मेघादि ननि

लवर्गुस्वरावा ॥ ३२ ॥ यश्रुत भागतक लुका निव ॐ दि २ सव सत्व डका निव शालीव
कि मलु ॥ ३३ ॥ ॐ श्य कानश्रु माघ सिद्धि वान सैराव २ जेयाह नूव वज्र कवान २ खमरु मेघादि ननि
नूषदा गिर भाद्रुशी रुव नूषु मलु कना गिर रुन निग्व सामि श्रु रावन स्वराव ॥ ३४ ॥
॥ ३३ ॥ ॐ ॥ नागभाद्र गीवि ॥ गानव कतान वकि कलुल कलिना वके मघन
उषित गीवि वै नूगन लडिन माना २ सनव कि वकि नेया रुस्म विउषित गगलता निव
इनिवाना ॥ ३४ ॥ श्रुम्भ सगिरु नूव दमानू काना जगनाथ शी सम्भन नाया शवज कना
नकल श्य धनिया कलुदिन दूषदा गिर सरुट जा गिना कमल विहा गिना महास

[illegible]

न एव स्रस्वयं दुःखं न हि ज्ञानं न ज्ञानाय निपातितः न न वृद्धं रवाधिविलग्नवनयावियनिमिषं
सयनाशर्तनाङ्कं न नागनाङ्कं न नागनाङ्कं ॥ ३५ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
१ धनसिद्धावाङ्कं ॥ गुग्गुलुमदनं दधुनीं कुण्डलपुञ्जां कुरु यागं सिद्धमपुञ्जां ॥ नागस्र
जयमिहनाह ॥ गालेन कननि ॥ शिद्वसिनाश्वदिनकरमधुन ॥ नाजिगजिष्ठवनजननिश्च
गतकनधुनकनिनिनयनमात्रवधुनगलकुदनि ॥ ३६ ॥ देवीकननि ॥ कयानवराश्वधि
गनलेणीनमाशकमलकुनिनाइयिगाववाजयिनावायिसहजसिन्धिनीश्वदीकननिकयान
धनाश्वकिषिलकपुङ्गुन्दल ॥ कपुङ्गुकपुङ्गुसाणश्वहाथवाचककटिपाडमधुन ॥ चन ॥ ३७ ॥

पुस्तक ३

निकसिद्धी ॥ ५२ ॥ गूणदिवाविधिसमाफ ॥ ॐ ॥ ॥ नागहेनवि ॥ गालर्जमान
॥ गऊजिनडईहाधधनिया कमलकुलिगंजगवानां २७ मन्त्रकनमिकुधालि ॥ ५३ ॥ वा
मदलंगकपालन ॥ ५४ ॥ श्रीसम्भवायैवाकुनिठकऊवनात्रल २ मानयिनवाधियाविन
माया सहगुरुअवगा ललिना ॥ पाणवक्र मूधुदादहाहाधधनियाडननधिनमाला २
विश्वकुलिगअवबलुऊठारुग ॥ व्याघ्रवनमषटमूडा ॥ ५५ ॥ अलीरयल्यारनवाययि
नध्वन कालिनालिदिनमूडा २ निलहनिगनाहित कनकामयवडमुख अतिविकनान
न ॥ ५६ ॥ शुभिसवीनवायध्वननायक गिनिवक्रमहाविनविना २ कनूगसनागविन

पुस्तक ३

ध्वन ॥ ५७ ॥ सुयसयनसैसावन ॥ ५८ ॥ ॐ ॥ ॥ ५९ ॥ नागहेनवागाल ॥ ऊयऊयवा
कुनीसयनसैराकनी २ अखयइःखसैहनिनी ॥ ६० ॥ लूनपुनयानहादेहायनकना
वयिमाननिनवाल्नह २ जिनयदयालदहीयनकजिनऊननोवऊयागिनी ॥ ६१ ॥ ऊयऊय
हानउआहननसैसावन कनतिकपालकनधाननी २ ऊयऊयनूडगममननहिति
गिनिवक्रनननसिनमाला ॥ ६२ ॥ ऊयऊयलाखऊऊगतसैसावन ॥ यलमामिअदयैवाकुनी ॥
॥ ६३ ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ ॥ ६४ ॥ नागऊलवर्ण ॥ अकनमा ० ॥ ६५ ॥ अऊदिमुखगिनीनयना २
मककगदिगवना ॥ ६६ ॥ ननाका ३ ॥ वामकनाठकदहिनकनागैरहाउआउ

विमल ३३

हृदयविरुषिता ॥ ॐ ॥ सूर्यमल्लमागतालुवमूर्तिश्च नवगिन्मालसूक्ष्मादिना ॥
॥ ॐ ॥ सतगुणवतनसिनेगतधनियारवजवावाहिआलिगिता ॥ ॐ ॥ ५३ ॥
१नागरुनविगागालवैया ॥ अश्वकृष्णपालदिगंविदिगंरुवन ॥ धंसानमानवठुनघन ॥
गगदासाखनगगदामनकनकावा ॥ गगदादामात्रधैथवाजियान ॥ ॐ ॥ कृष्णनमामि
धैवआहारशाकिनीयश्वरुवति ॥ सानगकिनीधनदशगहगगा ॥ २यूवडरुनपक्षि
मदक्रिदावठुखवन ॥ विघनमानविघनखण्डियाव ॥ २वजगकिनिधानवगालगकिनी ॥ व
अलगकिनीवठुनदवी ॥ ॐ ॥ सिद्धिनीयाधिनी ॥ अश्वकृष्णवाकिनी ॥ खलंगयनग

विमल ३३

अश्वकृष्णदलुहसुआशाकिनीदिकिनीवडसिकवाजिनी ॥ धालनवादनकाणवदनी ॥ ॐ ॥
किनेजनतादवीगकिनीउरुययिसनल ॥ पवरमूद्रारुनगखषवीया ॥ २खलंगयनग
अश्वकृष्णविलांगपाठमश्वगमामिदवीधीहानभववी ॥ ॐ ॥ ५३ ॥ ॐ ॥
१नागमालव ॥ गालमाथ ॥ वजिनिधानवगानावकुलिनी ॥ सिद्धिनीयाधिनी ॥ अश्वकृष्णवाकि
नी ॥ ॐ ॥ नमाविष्णीयागमन्वनहानभववी ॥ जिनगदवीगिखवनयविष्णा ॥ ॐ ॥
यूवडरुनपक्षिमदक्रिदादिगदवी ॥ शाकिनीदिकिनीवडसिकवाजिनी ॥ ॐ ॥
वठुनदिगठश्वरुलनकुदवी ॥ किनिनीदवीनावकुदवी ॥ ॐ ॥ रुनिहववका ॥ ॐ ॥

पुनः प्रथमं वाच्यम् ५१

५२ मन्त्रावली ५३

शुभ्रगलश्याज्यागिनीसमनसरावा ॥ ५१ ॥ ॐ ॥ नागरेववा ॥ गालवय ॥
पैकृतयमगतमनियान् समयाचार्यविष्णुहलन २५३ दिग्दंष्टावलश्रुतदरुसकं जानयति
पिबिष्णुनिनवारन ॥ ५२ ॥ श्विनवीनश्वनवलिदानदहा दानयतिशुश्रुवकोवृन ॥ ५३ ॥
युववेनःवन दक्षिनवत्तसैरव यक्षिमश्रुगारुजिनयापियाने २५४ वश्रुमाघसिद्धि
मोचमृकृत्वा वालिमानवडवकथपियाने ॥ ५४ ॥ समाधिष्टीसम्भनमाचकालवड
हवऊविष्णुखल्लर २ नानावाधिसुत्वश्रीवादि वालिमानवडयापियाने ॥ ५५ ॥
सिंहनादवाजियान ५६ मन्त्रवाजकं श्रुत्यागिनीविधियान ५७ मन्त्रवाजकं या श्रुतं

काय

मन्त्र

मन्त्रसमयजुः ५८

५९ यागसमयजुः ६०

यागिनीमनियान् २ जालन्धनियुक्तकर्तुयागभव्याया वालिमन्त्रवडवकथपियाने ॥
॥ ५६ ॥ ॐ ॥ नागेयद्रुजलि ॥ गालमा ० ॥ मलुलसमयवक्रमलुलस
युल्लुश्रद्धादगल्लवडवारवयन ॥ ५७ ॥ जानलुकत्रुष्टीसम्भनयागिनी २ शीयाखकना
नोदवीगान्नी ॥ दकिनीला माखलुनादात्रपिनी २ वा निमानवडवापियाने ॥ ५८ ॥
कायवाकविरुतिनीखवन २ दानयति याधुश्रुवगान्नी ॥ ५९ ॥ यागयागिनीमन्त्रास
मनसराव २ श्रुतमभनधीहृदव ॥ ६० ॥ ५९ ॥ नागहंदाव ॥ गालमा ० ॥ ॐ ॥
कृत्स्नरावमन्त्रागेनीलजीमूगसिकाध २ खर्वलवापलिनयनावाविषदनर्यक

६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

महाभारत

ना ॥ ५२ ॥ इदं श्रीमहाकालकृतं काव्यमूनिशमद्विसिद्धिवनदागाश्च कनगिखपनख
 ॐ शिबुलमानदय्यसिहाविगा ॥ ५२ ॥ नियूक्तदयापनियुत्तालीदायाद्युवर्ममू
 मालाश्च मौलीश्रुकारपठिनवनाशसनयाविगमहावीना ॥ ५२ ॥ इष्टकलावक्षानेजि
 द्वाभुक्तकठिडककेशश्च उजंगश्रुवनगहृषिगदहालीश्रुत्यापिश्यकना ॥ ५२ ॥
 श्रीदवमहाकालकृतिवनव्यापिगदवाश्रुवननसंविगाश्च सगगुर्वनगधीनाग
 र्जनवनगकमलवेदिगा ॥ ५२ ॥ १० ॥ ॥ १ ॥ नागललिता ॥ गालयेपा ॥ कात्यादि
 लिगश्रुकारपठिनमूनिगसिद्धिकालिजनगिनिउवनेश्चर्वलेवादलदालिगद्वकाना

कात्या दि १० वा ११

[illegible]

॥ वामखयनधनदहिनकनगिरयायननायनमूषुमालहृषिगा ॥ ५२ ॥ नावायिनकजगि
बऊयागिगीशगिनिनयदवालिठवनपयविष्णो ॥ ५३ ॥ मूससुश्रीनादवा निरुजहनदेवीर
धुन्यपाणदवीधुन्यसहाव ॥ ५४ ॥ कालमृगूहयियाधधवेधियाशनागद्वेषमाहकन
तिनकदि ॥ ५५ ॥ धृषिसुहानमीतानूदीदवीरमाकमार्गदवीतुक्कययिधनवला ॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥ ॐ ॥ रागनामकनि ॥ तानमा ॥ कमलविकाजितह्लिमिहृडासन
कूमदपियवर्णसर्मंदहाश्वठनवदनकवलयदलसमनयपकाधिगा ॥ ५८ ॥ नमामि
धीधामरामशुधीसकनयुननायसुनयुनरकूमगिदहनह्लानयकाधिगसर्वह्लाननि

धिवनगता॥ क्र ॥ यथमकनद्यधमनिगवजघर्णमूडामालिगननाडिगाशद्विगियाक
 धधनगतायहानस्कभ्वउथखगसिबैरुनधना॥ क्र ॥ डरुयउउपाठवनधमवापच
 उथवामधगयसुका३नगनमकठजिनयजालिग किलिषनासनरविवना॥ क्र ॥ नि
 वृद्धिवृद्धिरुयिनिमिर्हरुनिगा सर्वहूहूहान निधिवनप्रदारवनधकमलशिनगगयनि
 योपनेमाधवजन्माना॥ क्र ॥ ३३ ॥ ६०३ ॥ १नागजूरुनी॥ गालमा० ॥ विक
 वक्रमलापनिदिनकलमगुल सिन्दुववर्ण धर्मा दयायागिनी २शादवीपातवर्णमका
 नना तवप्रद्विरुलन विरुतय दायनी यागिनी २ ददिनवामयाद दूविगवध

गा। वक्रलाद विष्णो मगलु निरसयल सुवचन्दि गवचल ॥ अन्नगमद्विसिद्धिबल्यदा ॥
 ॥ नन्दनवनमिववन्दनगवच ॥ अन्नगकुसुमपाणिजातवन ॥ नितागं गमसनवागमनि
 गाव ॥ अन्नगगीधसुनिर्मिता ॥ ३ ॥ अन्नगवच अन्नयागिनीदवी ॥ अन्नगदवा सुवक्रगया
 ना ॥ अन्नमहासुयइति निववावनी ॥ अन्नगविघ्ननिवावनी ॥ ४ ॥ विष्णोयापिगगा
 न्निदवी ॥ अन्नयनिनानयागिमये ॥ अन्नमधसुखरुलदायनीदवी ॥ अन्नम
 उहवनगति ॥ ५ ॥ ॐ ॥ ॥ नागयज्ञजलि ॥ नासमाध ॥ उद्दिगलवनकमला
 सनकिलनललिगदा ॥ वनसुख ॥ नीमलदय ॥ कन्नमयनाधदहि अन्न

यवनयुदागा ॥ ६ ॥ उन्नदवशगह ॥ गसनना ॥ शिखवनयापितजगगडयानिया ॥
 यनमामिवगमलाके ध्वना ॥ ७ ॥ कनकलतमगिहलविहविता ॥ कनकधुवग
 धाविश्वामकेनधेनवलद ॥ अन्नवन ॥ सुह ॥ अन्ननन्दमृति ॥ अन्ननलजकुकिननग
 नयुजियालेललागवनसिनेगतधलिया ॥ तिमिनधोनेखलमाकूपदागा ॥ ८ ॥
 नयापइः खहनना ॥ नकवर्णमुखनरसुवावनासुवन्नरुगसैयु ॥ ९ ॥ नखखविग
 गमलि ॥ लाके ध्वन ॥ मलयमल्ललखवविजय ॥ १० ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 १ नागललिग ॥ इजमान ॥ अन्नदलसनाजउ इवयकाधिग ॥ ११ ॥ अन्नमूनिवनधनलावना ॥

卷之五

[illegible]

18

317

वाक् ॥ ॥ ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥ स्वस्ति वः कृत्वां वृद्धः स्वस्ति देवाः सप्त ककाः स्वस्ति सर्वाणि रुग्णानि स
र्वकारं दितीं वृद्धपुष्पा नूरावतं देवता नानि तत्र ॥ आयाथः समस्ति युतः सखा धर्मः समस्ति धर्मा ॥
स्वस्ति वः द्विपदा शानु स्वस्ति रुक्मचरु धातु ॥ स्वस्ति वः कर्ता माग्ने स्वस्ति युष्माकं सुत ॥ स्वस्ति वायु
स्वस्ति दिवा स्वस्ति मध्याह्ने स्वस्ति नक्षत्रे सर्वेषु स्वस्ति वायु माग्नेषु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु
सर्वेषु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥
सर्वेषु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥
॥ यानीदृशानि समागतानि स्तुतानि रुमावर्था न कलिक ॥ कर्वन्तु मे दी सततं यथा स दिवा त्रयाणि
त्रयन्तु धर्मा ॥ यानयन्तु जमानस्य आयुः प्राणायामनाथं श्रीमहर्षेयं यथा कामेनार्थं श्रीम

तदीधीयक समप्रवक्तृवादी आश्रयन ऊर्ध्वं रुनिमित्तं ॥ ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥ ॥ ॐ ह्रस्वसमाकमम् ॥ ॥
ॐ वदन्तु जनान् ॥ ३ ॥ सर्वेषु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥
तदुपविष्टां गिरिकाष्ठाग्निमधुलं वृकाग्रवृक्षं पीतवर्णं भक्तमुखं चतुर्भुजं वार्धक्यं कर्मणु वृ
धवं सर्वेषु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ यीताववा रुक्मचरु धातु ॥ यथा यद्विनिर्गम्यते तदुक्तं यथा यद्विनिर्गम्यते
वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ समयाग्निविशेषः ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥
दिवा कृतिमादायं आसीत् सन्निदिता रुक्म ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥
॥ ३ ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥ ॐ वदन्तु स्वस्ति वायु माग्नेषु ॥

रुद्रं ॥ ॥ नमो न्यायिणा धन ॥ ॐ श्रीः खगु गुरु ॥ या कृत ॥ ॥ ॐ जा स्वाहा ॥ ॥
 घृता धन ॥ ॐ श्रीः खगु गुरु ॥ ॥ ॐ सर्वया पान पन पंदी स्वाहा ॥ ॐ अ
 नद्यलका धन ॥ ॥ नमो शनि मुखी नंको वलय वरुलयमानं शुक्र वरुं विराज ॥ ॐ अ
 ग्रय स्वाहा ॥ घृता दूति ॥ स्वयं वदय ॥ ॥ जा गन वृजा ॥ ध्यान ॥ कु न्याय विदि कया गृ द्या वि स
 दलय दूक ॥ निखयं नद्य तयू ॥ कृष्ण ॥ ॐ द्यत सावक ॥ ॥ श्री कर्मन र्यं वतथा गत या स्वा न वाय
 यदा मुनि ॥ कृष्ण वृषा न सते ॥ ॥ श्री दन सि दल स ये द्य वदय ॥ ॥ ॐ अ कर्षय
 स्वाहा ॥ अर्क सि ॥ ॥ ॐ वरु मा माय स्वाहा ॥ यत्ना स सि ॥ ॥ ॐ वरु मा माय स्वाहा ॥ खग व सि ॥ ॥ ॐ वरु

वृद्धाय स्वाहा ॥ श्रूयामाग्नेसि ॥ ॐ वरुणं वल्गाय स्वाहा ॥ वटसी ॥ ॐ वरुणं यज्ञाय स्वाहा ॥ उद्वं व
सि ॥ ॐ वरुणा निधनाय स्वाहा ॥ ममिसि ॥ ॐ वाषिष्ठ्याय स्वाहा ॥ अश्वस्तु सि ॥ ॐ वरुणवाय स्वा
हा ॥ पुनसि ॥ ॐ वक्रतर्जिन्याय स्वाहा ॥ वक्रतनु ॥ ॐ मधून स्वाहा ॥ मधून ॥ ॐ अश्वका
य स्वाहा ॥ अश्वक ॥ ॐ सर्वयाय यसमनाय स्वाहा ॥ वेकथसि ॥ ॐ वरुणं सहकाराय स्वाहा ॥ आः
मुस्य ॥ ॐ सर्वक्रियाय समनाय स्वाहा ॥ कंदवंताय लिप्यति ॥ ॐ मिश्राय स्वाहा ॥ ॐ अयनिह
तव जाय स्वाहा ॥ कुक्षी ॥ ॐ वजाय स्वाहा ॥ इत्ताकु ॥ ॐ सर्वयेय दहनवजाय स्वाहा ॥ ॐ सर्वपायः
दहर स्वाहा ॥ तिलस्य ॥ ॐ वज्रय स्वाहा ॥ अयउतनुस्य ॥ ॐ वज्रवगाय स्वाहा ॥ यव

स॥ ॥ उवदुदसमनखादा॥ (गाधूमस्य॥ ॥ उवदुदविजायखादा॥ धानस्य॥ ॥ उवदुदमहा
 वलायखादा॥ माषस्य॥ ॥ उमादाकालायखादा॥ म्नात॥ ॥ उवदुदककलायखादा॥ काव
 त॥ ॥ उवदुदकलालवखादा॥ कउगुलि॥ ॥ उवदुदमृगलायखादा॥ मृग॥ ॥ उवदुदलाजाय
 खादा॥ माय॥ ॥ उसुवोथेसिद्धखादा॥ युका॥ ॥ उसेवसेयदखादा॥ दधिमुनस्य॥ ॥
 उवदुदीर्यतमायखादा॥ पीरु॥ ॥ उवदुदगर्जनरुलायखादा॥ कनरुतस्य॥ ॥ उमाः ॥
 मृनेषांति तत्वदाकया॥ ॥ पुथमाद्रुमि॥ ॥ उमानयतउजमानस्य ममवदुसुखयदलारुय
 धीमग्नीधीवकसमववदुवावाहीरुदातकाय क॥ वनकृम मूलरुनिमिषार्थं गुरुसुमृकि

मशु, खलिवकूडांवद्धादि x॥ ॥ उमृगदिवदीयाविषादिवमहाशियरुवावाहनाय दानयगे
 ऊजमानस्य त्यादि x॥ ॥ न्नि यस्मि कव्यथमाद्रुमिद्रु २ रूद्रुडं खादा॥ ॥ यतोयसवयूजाहुः
 मि॥ ॥ उंउंसंविजनित्यादि x॥ ॥ रुकाव त्यादि x॥ ॥ उंमि यथमाद्रुमि॥ ॥ रुकाव
 माद्रुमि॥ ॥ धान॥ ॥ ततावदुदवाचमनादिकंकृत्वा लोकातलं हानागविहय। दालाकालाः
 (मायगुवा (गदुदिकमलवन्द्यासनायदि मधुलाधियमि विजनिषात्र चिक्र विजयविषामन मधुः
 लाधियमि समाधुलयेविहय॥ ॥ हानसर्वव वडांकुशादि मृकष्ययवस्यवधामंता धकील
 नीलमिव समवसत्वनसुकीकृत्वा॥ याथावमनादिकंकृत्वा॥ यथोन्मास॥ ॥ अकितीय त्यादि x॥ ॥

कधवस्ति वसाव श्रववश्रुननिब्धनी श्रवनिदवनीसूत्र ववाययाक साववनीनानिखलाशु
ऊऊमानस्य दिशिदिशः ४ सादा ॥ ॥ कनकनावलि ॥ ॐ श्रीः हूं कीं कनकनसर्वसत्त्व वसंकलिः
सर्वरुयरुयकृत्रिब्धं वलि गन्धयशधयदीयेवाकनंदयाम्पदं सर्वदेवतागयकृगन्धवां सूत्र
गन्धुकिन्न वमहावगादयय (धर्वयथेष्ट) रुऊथसादययिवथडिद्यु मम ४ मनसिद्धिं युयुक्तः
ॐ श्रीः हूं कीं हूं रुद्र सादा ॥ ॥ थनमहावलि विद्या ॥ ॐ ततावलि रुवना वलिगन्धविद्या
वंकावली श्रमिमलुलं कंकावली मिमूर्धु आकावली यद्य रुऊनं नगरुकादिकं ॥ ॐ हूं वां डीं रं ॥
लां मां पां वां रं ॥ नदधिल्लितयं वामन पञ्चयदिय रुद्राडी रुकावरुनं वलु यथाकर्मयद्वक्ति ॥

गन्धवर्तुविद्यारुद्र व वायुयुक्ति कलितानि तायविलिना विज्ञाकृतादिकं भरुनवर्तु रुनवर्तु ॥
दधिरुगंदष्टा रुगायालालसवर्तु हूं रुद्राधमूखामृगमय धुकखलांगविलिना दवव्यामनं न
दूयविश्रालिकात्रिं वंडाकं ॥ ॐ श्रीः हूं ॥ वसिष्ठः सर्वतथागतादीनां वाधिविरुमिर्न सागवादि
रु श्रुतमाकृष्यकर्मकाविलिनमवः लाकयन ॥ आकर्षन याद्यादि यर्षन्यास। अकिनीत्या
दि ५ ॥ ॥ श्रुत्यान्यानुगतासर्वधर्मा ॥ ॐ यत्रस्यवानुगतासर्वधर्मा ॥ ॐ नृत्तकानूयवितासर्व
र्मा ॥ ॥ दयायमानं समययमानं नदृक् वाचध्वययमानं ॥ मनसं नरुवेयं वता ॥ दयायमाः
नृगुरुता ४ ॐ श्रीः वडाललिलाडं हूं वं रं ॥ वडसत्त्वहूं ॥ ॐ वडावविहः वडावावाही सम

यत्नं दत्ता ॥ उक्तं २ कृत् २ वन्ध २ गमय २ क्रौर्य २ क्षा २ कु २ रु २ रुट २ दद २ यव २ रुक २
 वगैव प्रधिराक्त मालावलयनं २ रु २ सयुगात्तल गतरुडं गां संपा म्वातजय २ आकट २ क्षी २
 क्षा २ र्था २ क्षा २ क्षी २ किमि २ सिलि २ धिलि २ रुं रुट साहा ॥ ॥ उं खखखाहि २ सर्वजक वाकस
 रुतयुतयिधावाभाद आकडाकिनि ॥ सादि ॥ ०० मं वलिगृह २ रुसमय वरुनु सर्वसिद्धिभयः
 रु रु यथर्व यथर्व रुजथ यिवथ डिथुथ मोलिकर्मथ ममसर्वकात्रतया सतपुष्वविधुधः
 य गगसहायकारुवन् रु रुट साहा ॥ ॥ यथोयदावयुजा मुक्ति ॥ उं नमधीवड सन्नाय ॥ देवा
 सूत्रासर्वरुड कसिद्धा । गङ्गास्ये कुं कितयूठ नाया गन्धर्वयक्षा यदुजागर्थय यंकधिरुभोनिव

॥ १ ॥
 निदिद्या नमस्कृतान् पृथिवीतलं रुगां कलिर्विहृयिमा मिता रु सयुगाले सदुरुहसद्यो । प्रत्वाः
 ०० हाया ननु गृहा धरि ममवयिषु निवसति रुगातय नंदल्लयधमवावय वधाय योदया रु वविमधु
 लेषू न गेषू सर्वेषु वयवसक्ति ३ गत्री वसुसर्वसुवर्मगमषू वत्तावयायायिहृताधिया सा शावापि
 तडा गेषू वयव लेषू कथेषू वयवेषू वनिवृ वेषू ऊया मद्याधषवकालनेषू सन्ना वयवदव गृहषू ऊ
 य विहावयव ल्यावसथसमेषू म(०) षू लालासुवकं ऊवषू ॥ रुगातय गग गृहावसक्ति वयवसूत्रीथीस
 यवत्ववेषू । यवैक वृक्षषू मद्याय(थेषू मदीममननममद्यायथाषू सिंदरुषू रुकाधुषितासुयव वसं
 निद्यायासु मद्याठवीषू ॥ दिवेषू दिवेषू रुगातलयाव मत्रीममननमवसन्ति यव दृष्टोपसन्नाद्यः

वनेव

यु ३ म ॥ १ ॥

मंगं धमात्ता धयमल्लिदियविप्रिश्चरुका गृह्णुहृजनुयिवनुवदं ॐ दयकर्मसकलं शगनु ॥ ८॥
 लेन्यनवडीसकदवमंथे ॐ दमल्लिगृह्णुमविनिष्ट अमियमानित्रीतिरुयतिथ आर्ययतिथाः
 यधनाधियथ ॐ गानरुगाधियनिष्टदया मउदवलाकियिनामहाय देवासमल्लिगृह्णुवदना
 गा धमाधलागुञ्जगनेगमता यनियनित्वकानिवययानि स्वकस्वकास्वयदिना सुरुग गृह्णुहृ
 त्वांसर्वसंसेन्या मयुगमिगस्वकनंसमता धूयंवलियुष्यवलिनिचदुंके रुजनुजिधुंनुयिवनु
 वदं ॐ दयकर्मसकलं शगनु ॥ १२ ॥ एकदृक्कामो नता यवतककुलं गृह्णु गामयाध्वय
 (थकनं शुन्यागावविमंघठः। रुजनेधयगनेरुगा मानगाह्रविः। षठ् कृष्णोऽमलानुदयव

[illegible]

ॐ नमः श्रीवद्व्यावाधेय ॥ यथा मज्जा माथां थय न धून काव क्रियात्तरु ॥ शुद्धमधुन वलिः
विसृज्य नमः सिन्धुव्यूता वरुण्य निमग्न विजाय कलेशयूता कुरु न्याग याव न्याग थयान्ति
व कोल्यासा ॥ ॥ तत्त्वाधीवद्व्यावाधेय सर्वयाययमावनी ॥ मावविध्वंसनीयवी वरुण्यनदा
यनी ॥ ध्यान ॥ गणनास्ति यकावलाविश्वदलयर्षी तद्वयविद्य सह दय सामस्य ग्निमध्य स
वकावगर्भकलियविनामन आत्मानं वद्व्यागिणी म्मावय ॥ द्विगुणाद्विमर्षी द्विगुणा ॥ धेव
कलिकया वधवली ॥ मरु कलिवनया वधिनगानवडोवना वावधायक मडायेरुमिनामडा
रुनी ॥ यश्च वरुणमहामुक्ती अरुण्ययकटाधुवी ॥ उवासिन्दुवशीदृष्य कोलास्यादक्षि (वः

गणः कावस्यावासतथायिवकद्वयसमन्विता ॥ समुक्रियवमा (थनमहासखकप्रताप्तिर्का ॥ ॐ नमः
कामादनीयवी आत्मानं सववावय ॥ उद्धवंदाधीमगवजवावाहीयवी रुद्रावकाय याद्वीयुक्ति
स्वादा ॥ ॥ यथा न्यास ॥ ॐ ३ सर्ववद्व्याकिनीयवजवर्धनीयवजवैवावनीयवजययी आः
रुद्र ॥ मध ॥ ॐ वं वद्व्यावाहीवद्व्याययी आः रुद्र स्वादा ॥ ॐ हां यां यामिनीवद्व्याययी आः
रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं मां मादनीवद्व्याययी आः रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं सैवात्रिणीवद्व्याययी आः
रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं सैवात्रिणीवद्व्याययी आः रुद्र स्वादा ॥ ॐ ह्रीं २ वलिकार्यवजययी आः
रुद्र स्वादा ॥ ॥ षट्का (वामावकन ॥ यथा मज्जा माथां थय न धून काव क्रियात्तरु ॥ शुद्धमधुन वलिः